जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

25 फरवरी, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 'औपनिवेशिक और स्वतंत्र भारत में मुसलमान और आधुनिकता' पर तीसरा मुशीरुल हसन स्मृति सेमिनार आयोजित

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास एवं संस्कृति विभाग ने 24 फरवरी, 2025 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पूर्व कुलपति प्रो मुशीरुल हसन की स्मृति में तीसरा मुशीरुल हसन मेमोरियल सेमिनार आयोजित किया। सेमिनार का विषय था, "औपनिवेशिक एवं स्वतंत्र भारत में मुसलमान और आधुनिकता"। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो मजहर आसिफ थे और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रो शाफे किदवई ने बीज वक्तव्य दिया । प्रो जोया हसन, प्रोफेसर एमेरिटस, सीपीएस, जेएनयू विशेष आमंत्रित थीं।

कार्यक्रम की शुरुआत इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो प्रीति शर्मा के स्वागत भाषण से हुई। अतिथियों के औपचारिक स्वागत के उपरांत उन्होंने सेमिनार के विषय पर रोशनी डाली । उनके संबोधन के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास एवं संस्कृति विभाग के डॉ. जावेद आलम ने 'मुशीरुल हसन के बारे में' एक संक्षिप्त स्मारक भाषण दिया जिसमें उन्होंने उत्कृष्ट इतिहासकार और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के पूर्व कुलपति के रूप में मुशीरुल हसन के जीवन, कार्य और योगदान का वर्णन किया।

प्रो शाफ़े किदवई ने 'औपनिवेशिक आधुनिकता और सर सैयद की कथा' शीर्षक से अपने बीज वक्तव्य में भारत में मुसलमानों के बीच आधुनिकता के प्रचार-प्रसार में सर सैयद अहमद खान की भूमिका के बारे में चर्चा की जिससे उनमें एक नई जागृति आई । प्रो किदवई ने सर सैयद द्वारा प्रदर्शित व्यावहारिकता पर रोशनी डाली जिसमें उन्होंने अब्राहमिक धर्मों की जांच करते हुए उनके व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाया और अपने विचारों को पुष्ट करने के लिए उन पर व्यावहारिक टिप्पणियाँ प्रदान कीं।

माननीय कुलपति, प्रोफेसर मज़हर आसिफ ने समापक भाषण दिया। उन्होंने कुलपति के रूप में प्रो मुशीरुल हसन के प्रयासों की चर्चा की और विचारोत्तेजक व्याख्यान के लिए बीज वक्तव्य देने वाले प्रोफेसर के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त प्रो आसिफ ने सेमिनार के विषय, खासकर 'आधुनिकता' की अवधारणा को समझाया और 'मुस्लिम होने का क्या मतलब है' के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक सिद्धांतों को बहुत ही आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया।

प्रो. आसिफ ने स्पष्ट और सुलभ भाषा का उपयोग करते हुए इस्लाम और आधुनिकता के बीच अंतर एवं अभिसरण को स्पष्ट किया और वह भी ठोस व स्थायी उदाहरण देते हुए । परिचयात्मक कार्यक्रम का समापन छात्रा अनुषा खान द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सेमिनार को तीन वर्किंग सत्रों में विभाजित किया गया था: पहला सत्र जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास एवं संस्कृति विभाग के प्रो रविंद्रन गोपीनाथ की अध्यक्षता में, दूसरा जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास एवं संस्कृति विभाग के प्रो फरहत नसरीन की अध्यक्षता में और तीसरा सत्र जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास एवं संस्कृति संकाय के सेवानिवृत्त प्रो आर.पी. बहुगुणा की अध्यक्षता में हुआ । पहले सत्र में दो पेपर प्रस्तुत किए गए। पहला पेपर डॉ. मुजीबुर रहमान, सहायक प्रोफेसर, सीएसएसईआईपी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसका शीर्षक था, "आज भारतीय मुसलमानों में आधुनिकता की खोज: एक स्वप्नलोक या कार्य प्रगति पर है ?"। दूसरा पेपर प्रो मोहम्मद सज्जाद, सीएएस

इतिहास, एएमयू द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसका शीर्षक था, "समकालीन समय में मुस्लिम पहचान की राजनीति"।

दूसरे वर्किंग सत्र की शुरुआत प्रो हसन इमाम, सीएएस, इतिहास, एएमयू द्वारा "बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में मुस्लिम महिलाएं और आधुनिकता: एक विश्लेषण" शीर्षक से एक पेपर की प्रस्तुति के हुई । सत्र का दूसरा पेपर डॉ. हरीश वानखेड़े, सहायक प्रोफेसर, सीपीएस, जेएनयू द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसका शीर्षक था, "प्रारंभिक हिंदी सिनेमा में आधुनिक मुस्लिम पहचान का निर्माण"।

तीसरे और अंतिम वर्किंग सत्र की शुरुआत एनएमएमएल, दिल्ली की पूर्व फेलो डॉ. मरियम सिकंदर के "नई विधाएं एवं नवीनता की विधाएं: अवध पंच (1844) और औपनिवेशिक आधुनिकता की इसकी आलोचना" नामक पेपर प्रस्तुति से हुई । सेमिनार का दूसरा और अंतिम पेपर जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास एवं संस्कृति विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. जावेद आलम ने प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था, "मुस्लिम बुद्धिजीवी और उनकी राष्ट्रवादी एवं सामुदायिक चिंताएं: मुशीरुल हसन के लेखन से मोहम्मद अली, डॉ. एम.ए. अंसारी तथा अबुल कलाम आज़ाद पर वैचारिक प्रभाव "।

इसके साथ ही प्रो आर.पी. बहुगुणा ने समापन भाषण दिया और वहां मौजूद सभी वक्ताओं, संयोजकों एवं छात्रों के प्रति आभार व्यक्त किया ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया